बाल कथा-साहित्य और विज्ञान

● डॉ. कृष्ण कुमार मिश्र

बच्चे किसी राष्ट्र का भविष्य होते हैं। भविष्य में देश बनेगा, यह उसकी वर्तमान शिक्षा पर निर्भर करता है। व्यक्ति निर्माण में शिक्षा तथा साहित्य की अहम भूमिका होती है। शिक्षा तथा साहित्य परस्पर जुड़े हुए हैं। साहित्य की दुनिया में बाल साहित्य की अपनी खास अहमियत होती है। यह वह विधा है जिसमें बच्चों के धरातल तथा भावभूमि पर उतर साहित्य सृजन करना पड़ता है। ज़ाहिर है, यह कोई आसान काम नहीं है। आज बाल केंद्रित शिक्षा पर बहुत ज़ोर है। ऐसी शिक्षा, जो बच्चों की ज़रूरतों तथा उनके चिंतन संसार को ध्यान में रखकर दी जाए। वह शिक्षा जो बाल सुलभ कौतूहल तथा बाल मनोविज्ञान को ध्यान में रखते हुए तैयार की गई हो। यानी बच्चों की पाठ्यचर्या में उनकी ज़रूरतों, अभिरुचियों, विचारों तथा चिंतन को ध्यान में रखते हुए सामग्रियाँ तथा अध्यापन पद्धतियों का विकास किया गया हो। कथा संभवत: मानव इतिहास की सबसे पुरानी विधा है। आदिमानव ने जब भाषा सीखी होगी तो उसने अपने जीवनानुभवों को क़िस्से-कहानियों के रूप में अपने परिजनों या निकटवर्तियों से साझा किया होगा। भाषाविज्ञानियों का ऐसा ही मानना है। विज्ञान साहित्य को

यदि हम लोकप्रिय बनाना चाहते हैं तो विज्ञान कथाओं पर सर्वाधिक बल दिया जाना चाहिए। उसका हर तरह से संवर्धन किया जाना चाहिए। बच्चों के बीच यदि विज्ञान को रोचक तरीके से ले जाना हो तो विज्ञान कथाओं से बेहतर माध्यम दूसरा नहीं हो सकता।

कहानियाँ जीवन का हिस्सा

क़िस्से-कहानियाँ बच्चों को हमेशा से लुभाती रही हैं। शिक्षाशास्त्रियों ने कहानियों को सम्मोहन का शास्त्र बताया है। वैसे कहानियाँ बच्चों ही नहीं, बड़ों को भी उतना ही पसंद आती हैं। पहले के समय में देश की आबादी का अधिकांश हमारे गाँवों में बसता था। लोगों का मुख्य व्यवसाय खेती थी। परिवार सामूहिक होते थे। एक कुटुंब में माता-पिता, भाई-बहन, चाचा-चाची, दादा-दादी, ताऊ-ताई, तथा उन सभी के बाल-बच्चे साथ रहते थे। एक परिवार में प्राय: एक साथ तीन या चार पीढ़ियाँ रहती थीं। तब मनोरंजन के आज जैसे साधन न थे। उस समय खेती-बारी के कामों से फ़ुरसत पाने पर प्राय: शाम को बड़े-बुजुर्ग बच्चों को पास बैठाकर क़िस्से सुनाते थे। ये क़िस्से ज़ाहिर है, वे भी अपने दादा-दादी या नाना-नानी से सुने हुए रहते थे। इस तरह समाज में लोकसाहित्य की एक वाचिक धारा पीढ़ी-दर-पीढ़ी प्रवाहित होती रहती थी।

भारत में कथा परंपरा

पंचतंत्र तथा जातक कथाएँ हज़ारों साल से हमारे समाज में लोकप्रिय रही हैं। पंडित विष्णु शर्मा रचित पंचतंत्र की गिनती दुनिया की श्रेष्ठतम बाल कथाओं में की जाती है। इसका दुनिया की अनेक भाषाओं में अनुवाद हो चुका है। हमारे देश में स्कूल स्तर पर हिंदी, संस्कृत तथा अंग्रेज़ी की किताबों में ये कहानियाँ हमेशा से पाठ्यक्रम का हिस्सा रही हैं। दुनिया के अन्य देशों में भी इन कहानियों को उतना ही आदर प्राप्त है जितना हमारे देश में है। आज दुनिया भर के शिक्षाशास्त्री तथा बालमनोविज्ञानी इस बात को स्वीकार करते हैं कि बच्चों के कल्पना जगत में पशुओं, पक्षियों का अप्रतिम स्थान होता है। वे स्वाभाविक रूप से इनकी ओर आकृष्ट रहते हैं। जानवरों की दुनिया में उनमें रुचि, कौतूहल तथा जिज्ञासा होती है। पंचतंत्र में प्राय: इन्हीं की चर्चा है। इनमें पशु-पक्षी एक दूसरे से बात करते हैं। उनमें उसी तरह संवाद होता है जैसे कि मानव समाज में होता है। इन कथाओं में नैतिक मूल्य निहित हैं। इन कहानियों

के ज़रिए सच्चाई, त्याग, सेवा, अपरिग्रह, दया, क्षमा, करुणा, स्नेह, जैसे जीवनमूल्यों को संप्रेषित करने की कोशिश की गई है। ये सभी मूल्य मानव समाज के लिए नितांत ज़रूरी हैं। इन कथाओं के ज़रिए वास्तव में बाल मन में जीवन मूल्यों का बीजारोपण होता है।

आज से करीब 2000 साल पहले लिखी गई पंचतंत्र की कहानियाँ कालजयी हैं। माना जाता है कि यह दुनिया की सर्वाधिक भाषाओं में अनूदित भारतीय साहित्य है। कहा जाता है कि उस समय एक राजा थे। उन्होंने पंडित विष्णु शर्मा को अपने बेटे के लिए सुंदर-सुंदर शिक्षापरक कहानियाँ रचने तथा सुनाने के किए अपने दरबार में नियुक्त किया था। राजा की कोशिश थी कि अच्छी-अच्छी कहानियों से बचपन से ही राजकुमार में मानवीय गुण संप्रेषित तथा संपुष्ट होंगे। पंचतंत्र में वे ही कहानियाँ संग्रहीत हैं। ये कहानियाँ पाँच खंडों में विभक्त हैं, जिन्हें तंत्र कहा गया है। पाँच तंत्रों के समावेश के कारण इन्हें पंचतंत्र कहा गया। विश्वविख्यात लेखक रुडयार्ड किपलिंग की पुस्तक 'जंगल बुक' पर बनी फ़िल्म दुनिया में करोड़ों बच्चों के बीच कितनी लोकप्रिय हुई, यह हम सबके सामने है। इस फिल्म की कथा वन्य प्राणियों पर ही आधारित है। इस फ़िल्म को तमाम भाषाओं में डब किया गया। इस फ़िल्म ने रिकॉर्ड सफलता पाई।

जातक कहानियाँ भारत की अमूल्य धरोहर हैं। जातक का शाब्दिक अर्थ होता है जन्म-संबंधी। ये कहानियाँ भगवान बुद्ध के पूर्वजन्म की कथाएँ हैं। ऐसी मान्यता है कि कोई व्यक्ति केवल एक जन्म के सत्कार्यों से बुद्धत्व को प्राप्त नहीं हो सकता। बल्कि बुद्ध बनने के लिए जन्म-जन्मान्तर के संचित पुण्य की आवश्यकता होती है। जातक कथाओं में भगवान बुद्ध के पूर्व जन्मों की घटनाओं का उल्लेख मिलता है, जिनमें मानव तथा मानववेतर प्राणियों के रूप में उनका धरती पर आविर्भाव होता है। इन सभी कथाओं में श्रेष्ठ जीवन मूल्यों की बात स्थापित की गई है। ये कथाएँ करीब 300 ईसा पूर्व से लेकर ईसा के बाद चौथी सदी, तक कुल 700 वर्षों के दौरान लिखी गई हैं। जातक कथाओं के तमाम संग्रह मिलते हैं। जन साहित्य के व्यापक प्रसार हेतु सस्ता साहित्य मंडल ने काफी काम किया है। इसने जातक कथाओं का एक संकलन भदंत आनंद कौसल्यायन के संपादकत्व में प्रकाशित

किया है। सस्ता साहित्य मंडल एक धर्मार्थ संस्था है। इसकी स्थापना सन 1925 में महात्मा गांधी की प्रेरणा से हुई थी। इसके गठन में जमनालाल बजाज तथा घनश्यामदास बिड़ला की मुख्य भूमिका थी। मंडल का उद्देश्य उच्चस्तरीय साहित्य को बिना मुनाफ़े के लोगों तक पहुँचाना रहा है।

अतीत बनती क़िस्सागोई

वैश्वीकरण, उदारीकरण, शहरीकरण के चलते संयुक्त परिवार की इकाई धीरे-धीरे टूटती गई है। युवा वर्ग रोज़ी-रोटी की तलाश में शहर की तरफ पलायन कर रहा है। गाँव में वही लोग रुके हुए हैं जिनके पास स्थानीय स्तर पर कोई कारोबार हो, नियमित आय का ज़रिया हो, या फिर निहायत मजबूरियाँ हों। कई प्रांतों, विशेष करके पर्वतीय प्रदेशों में ऐसी स्थिति है कि वहाँ गाँव के गाँव खाली हो चुके हैं। वहाँ सभी घरों में ताले पड़े हैं। गाँव की समूची आबादी विस्थापित हो चुकी है। उत्तराखंड में ऐसा कई जगह हुआ है। ऐसे हालात में जब शहर तेज़ी से विस्तार पा रहे हों, तथा गाँवों की कीमत पर तरक्की कर रहे हों, हमारे लोकजीवन की बहुत सारी चीज़ें छूटती जा रही हैं। क़िस्से कहानियों की परंपरा उन्हीं में से एक है। अत: ज़रूरत है कि हम उस प्राचीन विरासत की ओर लौटें तथा अपनी थाती को सहेजें।

विज्ञान कथाओं की भूमिका

लोककथा के साथ-साथ हमें बाल विज्ञान कथाओं के विकास पर भी ध्यान देना होगा। साहित्य या विज्ञान के प्रति अनुराग का भाव बचपन में सरलता जगाया जा सकता है। हिंदी में विज्ञान कथाओं की बहुत सुदृढ़ परम्परा नहीं बन सकी है। ये कथाएँ देश में आम जन में पहुँच नहीं सकी हैं। ये सिर्फ़ सुशिक्षित तथा अकादमिक लोगों में ही पढ़ी जाती हैं। बालकों के लिए विज्ञान कथा साहित्य बहुत कम है। पिछले करीब तीन दशकों के दौरान शिक्षा के क्षेत्र में पसंद के एक विषय के तौर पर विज्ञान की लोकप्रियता दुनिया भर में कम होती रही है। इसका एक मुख्य कारण है पाठशालाओं में विज्ञान पढ़ाने की शैली बहुत अच्छी तथा रोचक नहीं रही। रुचिकर शैली में विज्ञान पढ़ाने वाले शिक्षक भी बहुत कम मिलते हैं। विज्ञान को रोचक बनाने के लिए उसे रोज़मर्रा के जीवन से जोड़ना आवश्यक है। विज्ञान जानने के लिए उसके सिद्धान्तों को जानना ज़रूरी माना जाता है जो शायद बहुत उचित नहीं है। जीवन की आम घटनाओं

में विज्ञान भरा पड़ा है। किसी वृक्ष से फल ज़मीन पर क्यों गिरता है, यह समझाने के लिए न्यूटन के गति के नियम की व्याख्या ज़रूरी नहीं। प्राइमरी के विद्यार्थी को इतना बताना काफी होगा कि पृथ्वी में आकर्षण शक्ति है। वह हर वस्तु को अपनी ओर खींचती है।

विज्ञान कथा, यानी यथार्थ एवं कल्पना का सम्मिश्रण

महान कथाकार प्रेमचंद ने कहा है कि इतिहास सच होकर भी असत्य है क्योंकि वह तमाम घात, प्रतिघात, युद्ध तथा नरसंहारों से भरा पड़ा है। जबकि कहानियाँ कल्पित होते हुए भी सत्य हैं क्योंकि वे हमारे जीवन के करीब हैं। इस दृष्टि से विज्ञान कथाएँ , खास कर के बाल विज्ञान कथाएँ भी जीवन की हक़ीक़त के निकट हैं। वे आज के विज्ञान की बुनियादी बातों के साथ हमें भविष्य की कल्पना में ले जाती हैं जो सब कुछ वास्तविक लगता है। कथाएँ आनंद प्रदान करती हैं। इसलिए विज्ञान को देश के कोटि-कोटि बच्चों तक पहुँचाने में विज्ञान साहित्यकारों की भूमिका बड़ी महत्वपूर्ण हो जाती है। हिंदी में विज्ञान लेखकों को साहित्य की मुख्यधारा में वाजिब स्थान नहीं मिल सका है। यह वास्तव में बहुत खेदजनक स्थिति है। यद्यपि एक समय साहित्यिक पत्रिकाओं में विज्ञान आधारित लेख तथा कहानियाँ खूब लिखी जाती थीं। यह आज़ादी के पहले का समय था। स्वातंत्र्योत्तर काल में स्थिति बदल गई । इसमें विज्ञान लेखकों को वह स्थान नहीं मिला, जिसके वे हक़दार रहे। बाल विज्ञान लेखन भी इसका अपवाद नहीं है। वैसे हिंदी में विपुल मात्रा में बाल साहित्य की रचना हुई है, और आज भी हो रही है। लेकिन बाल विज्ञान साहित्य पर उतना काम नहीं हुआ, जितना अपेक्षित था। डिजिटल युग में प्रिंट माध्यमों के सामने व्यावहारिक चुनौतियाँ हैं। पत्र-पत्रिकाओं में विज्ञान के लिए स्थान सीमित ही रहा है। रविवारीय अंकों या वर्ष में एक बार, या फिर किसी बड़ी वैज्ञानिक घटना को लेकर विशेषांक भले निकले हों। लेकिन विज्ञान के नियमित स्तंभ मुश्किल से ही मिलते हैं। हिंदी साहित्य में बाल विज्ञान-कथा लेखन जैसी बहुत स्पष्ट परंपरा का स्थापित होना अभी शेष है। हिंदी में सरल भाषा में छोटी-छोटी विज्ञान कथाएँ लिखने की ज़रूरत है। इन विज्ञान कथाओं में पात्रों की संख्या सीमित होनी चाहिए जिससे कि कथानक आसानी से समझ में आए। ये विज्ञान कथाएँ वास्तविकता की भावभूमि पर खड़ी

हों, वे सिर्फ कपोल कल्पना मात्र न हों।

दरअसल, बाल ज्ञान कथा-साहित्य का उद्देश्य बाल पाठकों का मनोरंजन करना ही नहीं अपितु उन्हें आज की जीवन की सच्चाइयों से परिचित कराना है। कहानियों के माध्यम से हम बच्चों को शिक्षा प्रदान करके उनका व्यक्तित्व निर्माण कर सकते हैं। तभी ये बच्चे भावी जीवन के लिए तैयार हो सकेंगे। इन बच्चों को बड़े होकर अंतरिक्ष यात्राएँ करनी हैं, चाँद पर जाना है, कृत्रिम बुद्धि पर काम करना है। इन्हें अंतरग्रहीय यानों के मिशन पर काम करना है। भावी पीढ़ी के बच्चों को तरह-तरह के शैक्षिक मल्टीमीडिया प्रोग्राम, तथा ऐप तैयार करना है। उनके मानस को तैयार करने में विज्ञान कथाएँ अप्रतिम भूमिका निभाएँगी। उन्हें तरह-तरह के कौशल सीखने हैं। बाल-विज्ञान कथा-लेखक को बच्चों के मनोविज्ञान की बारीक जानकारी होनी चाहिए। तभी वह बाल मानस पटल पर उतर कर बच्चों के लिए कोई कहानी, या फिर कविता या बाल उपन्यास लिख सकता है। विज्ञान लेखक वास्तव में साहित्य की कलम से विज्ञान लिखता है। ज़ाहिर है, यह एक श्रमसाध्य कार्य है।

उपसंहार

आज देश में मध्यवर्गीय समाज में बच्चों के हाथों में स्मार्ट फोन, लैपटॉप, जैसी युक्तियाँ सुलभ हैं। इनके ज़रिए वे अपने आसपास की दुनिया के बारे में जानते हैं, समझते हैं। वे तमाम चीज़ों के अर्थ ग्रहण करते हैं, तथा दुनिया के बारे में अपनी समझ विकसित करते हैं। शिक्षा का अर्थ तथ्यों तथा आँकड़ों को जानना, या फिर याद कर लेना भर नहीं होता है। अल्बर्ट आइंस्टाइन के अनुसार शिक्षा का उद्देश्य संगत ढंग से सोचने-समझने की आदत विकसित करने से है। कुछ लोगों का मानना है कि दादी माँओं के मुख से सुनी हुई परियों, तथा परीलोक की कथाओं का आज के वैज्ञानिक युग में कोई मतलब नहीं है। उन्हें विज्ञान सम्मत

अल्बर्ट आइंस्टाइन के अनुसार शिक्षा का उद्देश्य संगत ढंग से सोचने-समझने की आदत विकसित करने से है। कुछ लोगों का मानना है कि दादी माँओं के मुख से सुनी हुई परियों, तथा परीलोक की कथाओं का आज के वैज्ञानिक युग में कोई मतलब नहीं है। उन्हें विज्ञान सम्मत जानकारी दी जानी चाहिए। परी-कथाएँ उनके मन में अवैज्ञानिक अवधारणा को जन्म देंगी। लेकिन शिक्षा से वास्ता रखने वाले तमाम लोगों का मत है कि वास्तव में ये कहानियाँ बच्चों के चिंतन को विस्तार देती हैं, उनमें कल्पनाशीलता जगाती हैं तथा उनकी समझ के क्षितिज को विस्तृत करती हैं।

जानकारी दी जानी चाहिए। परी-कथाएँ उनके मन में अवैज्ञानिक अवधारणा को जन्म देंगी। लेकिन शिक्षा से वास्ता रखने वाले तमाम लोगों का मत है कि वास्तव में ये कहानियाँ बच्चों के चिंतन को विस्तार देती हैं, उनमें कल्पनाशीलता जगाती हैं तथा उनकी समझ के क्षितिज को विस्तृत करती हैं। बच्चे बड़े होने पर अपने सहजबोध से इस बात से वाकिफ़ हो जाते हैं कि क्या यथार्थ है, और क्या काल्पनिक। इसलिए बच्चों के संपूर्ण संज्ञानात्मक विकास के लिए कहानियाँ बेहद ज़रूरी हैं। इन कहानियों के संदर्भ में बच्चों के लिए विज्ञान कथाओं की भी एक अनिवार्य भूमिका बनती है। लेकिन इस दिशा में अभी बहुत कुछ किया जाना शेष है।